जान द्यद

(प्रोजेक्ट ज़ान को समर्पित)

म.क.रैना, मुम्बई

(मूल कश्मीरी 'ज़ान द्यद' : हिंदी अनुवाद – लेखक)

चारों ओर वीरानी थी। मकान गिर गये थे। पेड़ जड़ समेत उखड़ गये थे। इनसान की सूरत में कोई कहीं नज़र नहीं आ रहा था। कई लोग बाढ़ में बह चुके थे और बाक़ी अपनी जान बचाने के लिये भाग गये थे। आकाश में अब भी काले घने बादल छाये थे लेकिन बारिश थम गई थी। कहीं कहीं कुत्ते और पक्षी दिखाई दे रहे थे जो वीराने में खाना तलाश कर रहे थे।

ज़ान द्यद ने आंखें मीच लीं। सारी व्यथुबल नगरी में दो ही निर्माण बचे हुये थे। एक नदी किनारे हज़ारों साल पुराना शिव जी का मंदिर जो आधे से ज़्यादा पानी में था, दूसरा ज़ान द्यद का झोंपड़ा, जिस के छत से घास और भोज पत्र तो गायब थे पर ढाँचा मौजूद था। ज़ान द्यद का यह झोंपड़ा पहाड़ी के ऊपर था और बाढ़ का पानी यहाँ तक न पहुँच पाया था। बाक़ी सब कुछ नष्ट हो चुका था।

ज़ान द्यद झोंपड़े के छज्जे पर बैठ कर यह दृश्य देख रही थी। कई महीनों की वर्षा के कारण उस के झोंपड़े को भी क्षति पहुँची थी। छत केवल नाम के लिये रह गई थी। खिड़कयों और दरवाज़े पर जो चटाइयाँ लगी हुईं थीं, वह वर्षा और आँधी से उड़ कर गिर चुकी थीं। पर झोपड़े के अंदर उस की 'वसमथ' अब भी ढ़ाई सेर कुंड़ी के साथ मौजूद थी। छज्जे के फ़र्श पर लगे हुये लकड़ी के तख्ते कुछ तो टूट गये थे और कुछ सड़ कर नष्ट हो चुके थे। मगर कोने में लगा हुआ अख़रोट की लकड़ी का तख्ता, जो काशी नाथ ने गुला बढ़ई के हाथों हाल हाल ही लगवाया था, सही सलामत था। ज़ान द्यद इसी तख्ते पर बैठ कर दूर मंदिर में विराजमान उस शिव लिंग को देख रही थी जिस का आधा हिस्सा पानी से बाहर था और जिस के ऊपर अब भी पीतल की गागर लटक रही थी।

ज़ान द्यद ने 'वसमथ' को ध्यान से देखा। यह 'वसमथ' उस ने बचपन से ही सम्भाल कर रखी हुई थी। अब तक कितने ही बाढ़ और कितने ही भूकम्प आये थे, मगर ज़ान द्यद की 'वसमथ' को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा था। 'वसमथ' के अंदर क्या था, यह ज़ान द्यद के सिवा किसी को मालूम नहीं था। हाँ, इतना सब को मालूम था कि जब भी किसी ने ज़ान द्यद से प्राचीन काल के बारे में कोई प्रश्न पूछा तो ज़ान द्यद ने इसी 'वसमथ' का ढक्कन उठा कर उस का उत्तर निकाला। कहते हैं ज़ान द्यद की 'वसमथ' में सब प्रश्नों का उत्तर मौजूद था। 'हब्बा खातून ने क्यों यूसुफ शाह चक से शादी की', 'राजा अवन्तीवर्मन ने कैसे

कश्मीर को बाढ़ से बचाया', 'कश्मीरी भाषा कैसे वजूद में आई', 'पँडित सोमदेव ने कब कथा सरित सागर लिखी', 'लल द्यद के वाक् और शेख नूर दीन वली के श्रुख कितनी गहरी बात बताते थे', 'क्षेमेन्द्र की लिखी हुई अनमोल पुस्तकें राजावली और नृपावली किस तरह लुप्त हुईं', या 'बाबा ऋषि और दस्तगीर साहब को हिन्दू मुसलमान दोनों समान पूज्यभाव से क्यों मानते थे', इन सब प्रश्नों का उत्तर 'वसमथ' में मौजूद था। कोई बात तीन साल पुरानी हो या तीन हज़ार साल पुरानी, ज़ान द्यद के एक इशारे पर 'वसमथ' उस का उत्तर देती थी। यही वजह है कि ज़ान द्यद को यह 'वसमथ' अपनी जान से भी प्यारी थी और वह इसे कभी भी अपने से दूर नहीं होने देती थी।

ज़ान द्यद की आयु कितनी थी, यह कोई नहीं जानता था। कोई उस की आयु दो सौ साल बता रहा था तो कोई हज़ार साल। व्यथुबल के वयोवृद्ध रहीम जू का कहना था कि उस ने हमेशा ही ज़ान द्यद को इसी सूरत में देखा है। इस बात को हीद्यद, जो स्वयं सौ साल से ऊपर थी, भी सही मानती थी।

ज़ान द्यद की आयु बहुत लम्बी थी। कहते हैं बहुत समय पहले उस ने माँ शारदा की बड़ी उपासना की थी। माँ शारदा उस से खुश हुई और उस के सामने साक्षात अष्टभुजा दुर्गा के रूप में प्रकट हुई। उस ने ज़ान द्यद को एक वरदान देने की पेशकश की। ज़ान द्यद ने अमर होने का वरदान मांगा क्योंकि वह जानती थी कि लोगों को हमेशा उस की ज़रूरत रहेगी। माँ दुर्गा ने कहा, ''इस संसार में कोई अमर नहीं हो सकता। जो पैदा हुआ, मर जायेगा। इस कारण तुम्हें भी अपनी मृत्यु का कोई समय तय करना होगा।'' ज़ान द्यद ने बहुत सोच कर कहा, ''फिर मेरा अंत उस समय हो जब मुझे यह विश्वास हो जाये कि लोगों को मेरी आवश्यकता नहीं रही।'' माँ दुर्गा ने 'तथास्तु' कहा।

बच्चों को ज़ान द्यद के साथ बहुत लगाव था क्योंकि वह उन्हें राजाओं और राज कुमारों की कहानियाँ सुनाती थी। यह सारी कहानियाँ 'वसमथ' के अंदर मौजूद थीं।

ज़ान द्यद अकेली नहीं थी। उस का कहना था कि व्यथुबल के सब लोग उस की अपनी सन्तान हैं। यह ठीक भी था। वह हर एक को अपना समझती थी और उन के ऊपर अपना अधिकार भी जताती थी। लोग माँ समझ कर उस की सेवा करते और समय समय पर काम आते। लोगों के व्यवहार से ज़ान द्यद बहुत खुश थी।

मगर हालात एकदम बदल गये। इस प्रकार की बाढ़ पहले कभी नहीं आयी थी। देखते ही देखते आकाश बरस पड़ा और सारा व्यथुबल पानी में डूब गया। जिन का भाग्य अच्छा था, वह भाग कर अपनी जान बचाने में सफल हुये। जिन का प्रकृति ने साथ नहीं दिया, वह बाल बच्चों समेत खत्म हो गये। मकान गिर गये और कितने ही लोग उन के अंदर दब कर मर गये। ज़ान द्यद यह सब देख रही थी। आकाश से ज़ोर का पानी बरस रहा था। घने बादलों की गरज और बिजली की कड़क ने पूरे व्यथुबल को अपनी लपेट में ले लिया था। कोई भी आदमी दूसरे की सहायता करने के योग्य नहीं था। जिस को जिस तरफ़ रास्ता मिला, उस तरफ़ भाग गया। कितने बच गये और कितने मर गये, इस का कोई हिसाब नहीं रहा। ज़ान द्यद बहुत चिल्लाई पर इस व्यापक विनाश में कोई किसी की पुकार नहीं सुन रहा था। पानी धीरे धीरे चढ़ रहा था। किसी भी समय ज़ान द्यद का झोपड़ा और उस की 'वसमथ' भी पानी के चपेट में आ जाते। देखते देखते पूरी नगरी खाली हो गयी और ज़ान द्यद अकेली रह गई।

कुछ दिन बाद वर्षा थम गई और आकाश साफ़ हो गया। अब धूप भी पड़ रही थी पर व्यथुबल उजाड़ था। न कोई आदमी नज़र आ रहा था और न कोई जानवर। नदी का पानी कम हो गया और मंदिर पूरा

दिखाई देने लगा। मगर पूजा करने वाला कोई न था। ज़ान द्यद को लगा कि शिव लिंग भी उदास मुद्रा में है। यद्यपि मंदिर दूर था पर ज़ान द्यद को दूर की चीज़ साफ़ साफ़ दिखाई दे रही थी।

इस घटना को हुये अब पूरा एक महीना हो गया। व्यथुबल का कोई भी आदमी ज़ान द्यद की खबर लेने वापिस नहीं आया। वह परेशान हुई। वह बार बार अपने लोगों के बारे में सोचती और उन की एक एक बात को याद करती। उस के ख़याल में पुराने ज़माने और नये ज़माने में बहुत अंतर था। पहले प्यार मुहब्बत का बोल बाला था। लोग एक दूसरे के लिये जान देते थे। अब उस तरह का प्यार नहीं रहा। आज का इंसान स्वार्थी था और केवल अपने बारे में ही सोचता था। ज़ान द्यद को पुराने ज़माने की और नये ज़माने की बातें ठीक तरह याद थीं।

❖ ❖ ❖

किशु काक नदी के उस पार रहता था। वह हर रोज़ धूप खिलने से पहले उठता था और नदी पर पहुँचता था। स्नान करके वह नंगे पाँव नदी को पार करता और शिवलिंग पर जल अर्पित करता। आंधी तूफान हो या ज़ोरों की बर्फ, किशु काक मंदिर आना नहीं भूलता था। वहाँ पहुंच कर वह पहले सीढ़ी के पत्थरों को धोता और शिवलिंग पर जल अर्पित कर गागर भरता। पूजा करने में भी उसे कम समय नहीं लगता था। पूजा समाप्त करके जब वह मंदिर से निकलता था उस समय सूरज बहुत ऊपर आ चुका होता।

क़ादिर काक आयु में किशु काक से बड़ा था। वह नदी के इस पार रहता था। नदी किनारे सलेटी पत्थर पर नमाज़ पढ़ कर वह ज़ान द्यद के पास पहुंचता और उसे वह फलाहार देता जो वह हर दिन उस के लिये अपने घर से लाता था। कहते हैं कि क़ादिर काक स्वयं खाना खाना भूल सकता था पर ज़ान द्यद का फलाहार वह कभी नहीं भूलता।

काशी नाथ बड़ी उम्र का था और उसे ज़ान द्यद से गहरा स्नेह था। उस का कहना था कि ज़ान द्यद ही वहाँ के लोगों की असली पहचान है। जिस दिन लोग उसे भूल जायेंगे, उसी दिन उन की पहचान भी समाप्त हो जायेगी। इस बात को सभी लोग मानते थे, कुछ मन से और कुछ ज़बानी।

अमु साहब का बेटा अली मुहम्मद शहर में नौकरी करता था। महीने दो महीने के बाद जब वह घर लौटता, एक थेली भर कर अपने नातेदारों और पडोसियों के लिये कुछ न कुछ ज़रूर लाता। ज़ान द्यद के लिये मोहर लाठ, दंत खोदनी, रेवड़ियाँ और नयी कंघी लाना वह कभी नहीं भूलता।

व्यथुबल का कोई आदमी जब स्वर्गवासी हो जाता, कई मीलों तक बसने वाले उस दिन उपवास रखते। क्रिया कर्म में भी सब लोग शामिल होते। दस दिन तक मरने वाले के घर में चूल्हा नहीं जलता और उन का पूरा खाना पड़ोसियों के घर से आता।

लोगों को ज़ान द्यद की चिन्ता लगी रहती थी। नगर का हर आदमी उस के पास उस का हाल चाल पूछने आ जाता। नगर वासियों को वह हमेशा आशीर्वाद देती।

लेकिन यह सब पुरानी बातें थीं। अब इनसान बदल चुका था। आज का इनसान इतना व्यस्त था कि दूसरे की खबर लेने के लिये उस के पास समय ही नहीं बचता था। इतना ही नहीं। ज्यों ज्यों लोग तरक्की करते गये, त्यों त्यों उन के मन में खोट भरता गया। एक को दूसरे की तरक्की करना अच्छा नहीं लगता था। हर एक के मन में दूसरे के लिये जलन पैदा होने लगी थी। आपसी प्यार समाप्त हो गया था और उस के बदले में शत्रुता और घृणा पनपने लगी थी। पर ज़ान द्यद के साथ सब का व्यवहार अच्छा ही रहा।

यह सोचते सोचते ज़ान द्यद को नींद आ गई। नींद में भी उस ने अपना हाथ 'वसमथ' की कुंडी पर जमा कर रखा। इसी दौरान उस ने एक सपना देखा .. .. ..

❖ ❖ ❖

अयोध्या नगरी जगमगा रही थी। राजा दशरथ का महल प्रज्वलित था। लोग नये नये कपड़े पहने थे और राजा दशरथ व राजकुमार रामचंद्र जी की जय जयकार कर रहे थे। आज रामचंद्र जी को अयोध्या का राजा बनना था। अयोध्या वासी बहुत खुश थे। महल के सामने लोगों का एक समंदर था। सब उस शुभ समय की प्रतीक्षा कर रहे थे जब रामचंद्र जी राज गद्दी पर बैठेंगे। ज़ान द्यद ने देखा, वह स्वयं भी उन लोगों के बीच एक लड़की के रूप में मौजूद थी। लड़की का नाम था बेला।

बेला बहुत दूर से रामचंद्र जी के दर्शन करने आई थी। लोगों के साथ साथ वह भी रामचंद्र जी के राज गद्दी पर बैठने की प्रतीक्षा कर रही थी। मगर विधाता ने कुछ और ही सोचा था। बेला का अरमान पूरा न हो सका। राज महल के अंदर एक बहुत बडा अनर्थ हुआ। रानी कैकई ने झगड़ा शुरू किया था। राजा दशरथ को उस की दो शर्तें पूरी करनी पड़ी। एक शर्त यह थी कि रामचंद्र जी के बदले भरत जी को राज गद्दी पर बिठाया जाये और दूसरी शर्त यह कि रामचंद्र जी को चौदह साल के लिये वनवास भेजा जाये।

जब यह ख़बर महल से बाहर पहुंची, सारी अयोध्या में मातम छा गया। लोग गूंगे और बहरे हो गये। उधर राजा दशरथ बेहोश हो गये थे। रामचंद्र जी, सीता जी और लक्ष्मण जी सन्यासियों का वेष धारण करके वनवास के लिये निकल पड़े। लोग उन के पीछे पीछे हो लिये। वह रामचंद्र जी के बिना अयोध्या में रहने को तैयार नहीं थे।

तमसा नदी पर पहुंच कर रामचंद्र जी ने रात गुज़ारने के लिये डेरा डाला। लोग वापस जाने को तैयार नहीं थे। वह वनवास के दौरान राम जी के साथ ही रहना चाहते थे। रामचंद्र जी को उन का तकलीफ़ उठाना पसंद नहीं था। रात के समय जब सब लोग सो रहे थे, रामचंद्र जी, सीता जी और लक्ष्मण जी सुमंत्र के रथ में चोरी छिपे निकल पड़े।

सुबह जब लोग नींद से उठे तो देखा कि राम चंद्र जी निकल गये थे। आगे कहाँ जाना है, यह उन को मालूम नहीं था। मायूस होकर वह वापस लौट आये पर बेला नहीं आई। वह रामचंद्र जी को ढूँढ़ने के लिये आगे निकल पड़ी।

बहुत चलकर बेला गंगा किनारे पहुंची। वहाँ पता चला कि राम जी, लक्ष्मण जी और सीता जी राजा निशाद की नाव में गंगा को पार करके निकल गये हैं। बेला को कहीं कोई केवट दिखाई न दिया जो उसे नदी के पार ले जाता। वह सब राम चंद्र जी के साथ ही गये थे। बेला का दिल टूट गया। लाचार होकर वह गंगा किनारे एक पेड़ के नीचे बैठ गई। उस ने प्रण किया कि वह तब तक अयोध्या वापस नहीं जायेगी जब तक रामचंद्र जी वापस नहीं आते। पेड़ के नीचे आसन लगाकर वह रामचंद्र जी का ध्यान करने लगी।

ध्यानावस्था में अभी बेला को थोडा ही समय हुआ था कि ढोल और नगाड़ों की आवाज़ से उस का ध्यान टूट गया। उस ने इधर उधर देखा। नदी किनारे सब केवट जमा हो गये थे। वह खुश होकर ढोल और नगाड़े बजा रहे थे और राम चंद्र जी की जय जयकार कर रहे थे। बेला की समझ में नहीं आया कि वह राम चंद्र जी का वनवास होने पर खुश थे कि नाराज़। एक तरफ़ तो वह उन की जय जयकार कर रहे थे और दूसरी तरफ़ नगाड़े बजा रहे थे। उन से पूछ कर जो बात बेला को मालूम हुई वह विश्वास करने के योग्य नहीं थी। रामचंद्र जी, लक्ष्मण जी और सीता जी चौदह वर्ष के वनवास के बाद पुष्पक विमान में अयोध्या

वापस लौट आये थे। बेला की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। केवट भी तो झूट नहीं बोलेंगे पर एक पल में चौदह वर्ष कैसे बीत गये? उसे यह सब कुछ सपना लग रहा था। वह इन्ही विचारों में खोई थी कि रामचंद्र जी साक्षात उसके सामने प्रकट हुये। राम चंद्र जी ने उस का हाथ पकड़ा। ज्योंही बेला को राम जी का हाथ लगा, हज़ारों सूर्य उस के सामने चमक उठे।

❖ ❖ ❖

सूर्य के तेज़ प्रकाश से ज़ान द्यद की नींद टूट गई। उसने देखा न उस के सामने बेला थी, न गंगा और न ही रामचंद्र जी। उस ने बाहर की तरफ देखा। वहाँ एक नई ही दुनिया थी। मंदिर कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। उस के सामने बड़े बड़े मकान बन गये थे। मकान आलीशान और रंगीन थे। नदी ग़ायब थी। उस की जगह एक छोटा नाला बह रहा था। मंदिर के पीछे जो बेद का जंगल था, वह अब नहीं था। उस की जगह एक बड़ा मैदान था जिस में कुछ आदमी बंदूक चलाने का अभ्यास कर रहे थे। जगह जगह लोगों की टोलियाँ थीं। लोग भी वह नहीं थे जो वहाँ पहले रहते थे। किसी किसी के कंधे पर बंदूक लटक रही थी। एक बड़े चिनार के नीचे कुछ घोड़े और शिकारी कुत्ते बंधे हुये थे।

ज़ान द्यद को विश्वास हो गया कि बेला के रूप में वह पूरे चौदह साल सोती रही है। राम चंद्र जी चौदह साल के वनवास के बाद अपने घर वापिस आ गये लेकिन उस के अपने राम, सीता और लक्ष्मण अपनी अयोध्या में वापस क्यों नहीं आये! वह कहाँ हैं?

अचानक कुछ शोर उठा और टोलियों में हलचल मच गई। एक बड़े मकान में से तीन आदमी निकल कर मैदान की तरफ आ गये। यहाँ वह उस ऊंचे टीले पर चढ़ गये जो शायद लोगों ने नदी की सीढ़ियाँ तोड़ कर उन के पत्थरों से बनाया था। तीनों आदमी चमड़े के कोट पहने हुये थे। एक आदमी पगड़ी बाँधे हुए था और उस के पीछे दो युवक बंदूक लेकर खड़े थे। वह आदमी नेता जान पड़ता था। अब इस टीले के सामने लोग जमा हो गये और नेता के इशारे पर वह सब ज़मीन पर बैठ गये। कुछ युवक टीले के आस पास खड़े रहे।

नेता भाषण दे रहा था। लोग हाथ उठा उठा कर उस की हाँ में हाँ मिला रहे थे। ज़ान द्यद ने ध्यान से देखा, लोगों में कुछ एक हाथ नहीं उठा रहे थे। नेता क्या बोल रहा था, इस के लिये ज़ान द्यद ने कान लगा कर सुनने की कोशिश की पर कुछ सुन नहीं पाई। अचानक सभा में से एक वृद्ध आदमी खड़ा हो गया और नेता से कुछ कहने लगा। वृद्ध आदमी के पास जो लोग बैठे थे, उन्होंने उसे ज़बरदस्ती नीचे बिठाया। नेता ने वृद्ध आदमी से कुछ कहा और फिर भाषण देने लगा। भाषण समाप्त हुआ तो लोगों ने तालियाँ बजाईं।

वृद्ध आदमी फिर खड़ा हो गया और नेता से कुछ कहने लगा। नेता का चेहरा देख कर लगता था कि उसे उस आदमी की बात पसंद नहीं आई। उस ने एक बंदूकधारी को इशारा किया। बंदूकधारी वृद्ध आदमी के पास आया और उसे बाज़ू से पकड़ कर बड़े चिनार के पास ले गया। सभा में से दो और आदमी निकले और उन्होंने वृद्ध आदमी को पेड़ के साथ बांध दिया। बंदूकधारी ने नेता की तरफ देखा। वृद्ध आदमी अब भी हाथ उठा उठा कर चिल्ला रहा था। नेता ने बंदूकधारी को इशारा किया। उस ने बंदूक की नाल वृद्ध आदमी के माथे से लगाई और घोड़ा दबा दिया। उस का सिर लटक गया।

सभा के अंदर सन्नाटा था। ज़ान द्यद की समझ में नहीं आ रहा था कि लोग इस घटना को ठीक समझ रहे थे या ग़लत। सभा में से एक नवयुवक उठा और पेड़ के पास गया। उस ने वृद्ध आदमी की लाश को पेड़ से खोल कर अपने कंधे पर डाल दिया। बंदूकधारी नवयुवक को लाश उठाने से मना कर रहा था मगर

नवयुवक उस की बात सुनने को तैयार नहीं था। बंदूकधारी ने नवयुवक को धक्का दिया और वह लाश समेत ज़मीन पर गिर पड़ा। लोगों मे बेचैनी पैदा हो गई। सभा में से नवयुवक का एक साथी सामने आया और उस को उठा लिया। नेता टीले से यह सब देख रहा था। उसे लगा कि सभा में कुछ और लोग भी उस के विरुद्ध हो रहे हैं। उस ने बंदूकधारी को आदेश दिया। आदेश पाते ही बंदूकधारी ने नवयुवक और उस के साथी को गोली से उड़ा दिया। अब ज़मीन पर एक के बदले तीन लाशें थीं।

लोग भय से यह सब देख रहे थे। किसी की हिम्मत कुछ बोलने की नहीं थी। नेता ने ऊंची आवाज़ में फिर कुछ कहा और चला गया। उस के साथ ही उस के साथी और बंदूकधारी भी चले गये। लोग खड़े हो गये और देखते देखते मैदान खाली हो गया। लाशें अब भी ज़मीन पर पड़ी हुई थीं। उन के आस पास खून ही खून जमा हो गया। मैदान के पीछे की तरफ गीदड़ इधर उधर भाग रहे थे। शायद वह पास आने का मौक़ा ढूँढ़ रहे थे।

ज़ान द्यद ने आंखें खुली रखीं। कुछ देर के बाद आठ युवक अलग अलग मकानों से निकले और चिनार के पास पहुंच गये। वहाँ उन्होंने घोड़ों को ज़ीन लगाना शुरू किया। घोड़ों के पास ही कुछ बंदूकें और थेलियाँ रखी थीं। युवकों ने यह सारा सामान उठाया और घोड़ों पर सवार होकर निकल पड़े।

ज़ान द्यद ने अपने झोपड़े को ध्यान से देखा। झोपड़ा वैसा ही था जैसा उस के नींद में डूबने से पहले था। पहाड़ी के नीचे कुछ लोग खेतों में काम कर रहे थे लेकिन उन में उस की पहचान का कोई नहीं था। ज़ान द्यद सोचने लगी, ''मैं अपनी संतान को फिर कब देखूँगी ?''

बहुत दूर, दो मकानों के बीच में से ज़ान द्यद को मंदिर का ऊपरी हिस्सा दिखाई दिया। मंदिर के सामने ऊंची घास उग आई थी। उस ने घास के बीच से बहुत गौर से देखा। शिव लिंग नीचे गिरा हुआ था और गागर गायब थी।

शाम को वह युवक वापस आ गये जो सुबह घोडों पर निकले थे। ज़ान द्यद ने उन को गिनना शुरू किया। आठ के बदले पाँच ही वापस आये थे। घोड़ों के ऊपर बहुत सारा कीमती सामान था जो उन लोगों ने शायद लूट कर लाया था। युवक जब क़रीब पहुंचे, ज़ान द्यद ने देखा उन के बदन और कपड़ों पर खून लगा हुआ था। ज़ान द्यद को पूरा यक़ीन था कि वह ख़ून इनसानी ख़ून था।

❖ ❖ ❖

लसु काक ने पंचांग देखा। आज पूरे चौदह साल हुये उन्हें व्यथुबल से यहाँ आये हुये। उसे वह समय याद आया जब वह लोग अपनी जान बचाते हुये व्यथुबल से भाग कर आये थे। भागते हुये उन्हें क्या क्या मुसीबतें उठानी पड़ी और वह कितने दिन चलते रहे, उस का कोई हिसाब नहीं था। उस सफर में भी उन से कितने छूट गये और कितने छोटे बड़े रास्ते में ही मर गये। लसु काक की औरत कमलावती पानी मांगती रही। उस की लड़की जब दूर से उस के लिये पानी ढूँढ़ कर लाई तब तक उस के प्राण निकल चुके थे। जानकी नाथ के दस साल के लड़के मोती लाल को बुख़ार आया ओर वह काँपने लगा। हकीम साहब मौजूद नहीं थे क्योंकि वह व्यथुबल में ही जड़ी बूटियाँ समेटते समेटते सैलाब में बह चुके थे। मोती लाल मुश्किल से दो घंटे ज़िन्दा रहा। उस की माँ पागल हो गई। जानकी नाथ को बेटे की लाश यूँही छोड़ कर पहले अपनी औरत को सम्भालना पड़ा।

फातु द्यद को उसका बेटा हाथ पकड़ कर चला रहा था। फिर भी वह ढलान पर फिसल कर नीचे लुढ़क गई। आगे चलना इतना मुश्किल हो गया कि बहुत सारे लोगों ने अपना कीमती सामान, जो उन्होंने भागते समय साथ में उठाया था, रास्ते में ही छोड़ दिया।

नई जगह का नाम था भरतपुर। यहाँ पहुँच कर लोगों को बेशुमार मुश्किलों का सामना करना पड़ा पर वह हिम्मत नहीं हारे। धीरे धीरे लोगों ने अपने रहने बसने का इन्तज़ाम कर लिया। कुछ समय बाद उन को पता चला कि व्यथुबल नगरी पर लुटेरों ने कब्ज़ा कर लिया है। लोगों के मना करने के बावजूद कैलास नाथ और बद्री नाथ अपने वतन को देखने के लिए निकल पड़े। पंद्रह दिन के बाद बद्री नाथ अपनी जान बचाते हुये वापिस आया मगर कैलास नाथ को वहाँ पहुंचते ही मार दिया गया था। इस घटना के बाद किसी और की हिम्मत वहाँ जाने की नहीं हुई। उन्होंने सोचा, ऊपर वाले की मदद से ही कुछ हो सकता है, नहीं तो सब व्यर्थ है।

भरतपुर एक बड़ा शहर था। यहाँ बहुत सारी जातियाँ रहती थीं। उन्होंने व्यथुबल के लोगों से हमदर्दी जताई। व्यथुबल के लोग बुद्धिमान भी थे ओर अच्छी सोच भी रखते थे। इसलिये उन्हें यहाँ के लोगों के साथ रहने में कोई तकलीफ नहीं हुई।

समय गुज़रता रहा। दुनिया बदलती रही। पुरानी पीढ़ी खत्म होने लगी और नई पीढ़ी जन्म लेने लगी। जो ज्ञानी बुज़ुर्ग थे वह एक एक करके इस संसार से उठने लगे। इस के साथ ही कुछ ऐसे प्रश्न पैदा हुये जिन का उत्तर ढूँढ़ना लोगों के लिए मुश्किल होने लगा। हर घर में प्रश्न उठते रहे। जैसे 'शिवरात्री के दूसरे दिन को सलाम क्यों कहते है?' या 'बच्चे के नामकरण पर भोजपत्र क्यों जलाया जाता है?' या 'हकीम साहब ने वासु काक के माथे पर तिलक देख कर क्यों यह कहा था कि वह मरने वाला है?' हर ज़बान पर ऐसे ऐसे बेशुमार प्रश्न थे जिन का उत्तर कभी मिलता था और कभी नहीं मिलता था। इस का मतलब यह नहीं कि व्यथुबल में इस प्रकार के प्रश्न नहीं उठते थे। प्रश्न तो वहाँ भी उठते थे पर वहाँ उन का उत्तर ढूँढ़ना मुश्किल नहीं था। वहाँ ज़ान द्यद थी ना! पर लोगों ने एक बड़ी गलती की। उन्होंने ज़ान द्यद के ज्ञान को नई पीढ़ी तक नहीं पहुंचाया था।

नई पीढ़ी चूंकि व्यथुबल में नहीं पली थी इसलिये उन्हें वहाँ जाने की कोई इच्छा नहीं थी। लेकिन जो चीज़ आँखों से दूर हो, उस के बारे में पता लगाना इनसान की प्रवृत्ति है। इस लिए छोटे लड़के लड़कियाँ हमेशा उस ज़मीन के बारे में कुछ सुनने को बेताब रहते थे जो उन के बुज़ुर्गों ने अपनी जान बचाते बचाते छोड़ दी थी। उन्होंने जब ज़ान द्यद के बारे में सुना तो दुखी हो गये। ब्रज नाथ ने जब अपने पिता से यह प्रश्न किया कि ज़ान द्यद कहाँ गई और वह उसे अपने साथ क्यों नहीं लाये, तो वह कोई उत्तर न दे सके। नई पीढ़ी को यह बात अच्छी नहीं लगी कि लोग अपनी जान बचाते बचाते ज़ान द्यद को बिलकुल ही भूल गये और यह कि उस की ख़बर भी किसी ने नहीं ली। वह यह जानने के लिये भी बेचैन थे कि 'वसमथ' क्या चीज़ थी और ज़ान द्यद उसमें से प्रश्नों का उत्तर कैसे निकालती थी।

❖ ❖ ❖

समु काक की नींद ग़ायब थी। उस के अपनी कोई संतान न थी पर बिरादरी के हर बच्चे को वह अपनी संतान मानते थे। बच्चे हर दिन शाम को उस के पास जाते और वह उन्हें पुराने ज़माने की कहानियाँ सुनाते। बच्चों ने जब उन से ज़ान द्यद के बारे में प्रश्न पूछे तो वह कोई उत्तर नहीं दे पाये। उन्हें लगा कि

उन का विवेक उन्हें लताड़ रहा है। कुछ ऐसी ही स्थिति सरवानंद की भी थी। वे दोनों इस बात पर राज़ी हो गये कि जान पर खेल कर ही सही, वह एक बार ज़ान द्यद के बारे में पता करने ज़रूर जायेंगे।

समु काक आयु में सरवानंद से बहुत बड़े थे फिर भी उन्होंने हिम्मत दिखायी। बहुत दिन चल कर और कठिन सफर तय करके वह व्यथुबल के निकट पहुंच गये। वहाँ उन्होंने एक नयी दुनिया देखी। मन में शंका थी। क्या पता कोई ज़ान द्यद के बारे में जानता भी होगा या नहीं? या अगर जानता भी होगा तो सच बोलने को राज़ी होगा या नहीं? इस बात का भी डर था कि कहीं वह लोग उन्हें मार ही न डालें। समु काक ने ऊपर पहाड़ी की तरफ देखा। ज़ान द्यद का झोपड़ा अब भी मौजूद था। यह देखने के लिये कि ज़ान द्यद की 'वसमथ' मौजूद है या नहीं, वह दोनों पीछे की तरफ से पहाड़ी पर चढ़ने लगे। झोपड़े के अंदर पहुँचते ही वह दोनों स्तब्ध रह गये। ज़ान द्यद उसी तरह छज्जे पर बैठी हुई थी जैसे वह पहले बैठती थी। उस का सिर सामने की तरफ झुका हुआ था और आँखें बंद थीं। ज़ान द्यद अब भी 'वसमथ' की कुंडी को पकड़े हुये थी। समु काक की समझ में कुछ नहीं आया। ज़ान द्यद जीवित है या मर गई है? यह देखने के लिये उस ने अपना हाथ धीरे से ज़ान द्यद के हाथ पर रखा। ज़ान द्यद अचानक जाग गई। कुंड़ी को और ज़ोर से पकडा और अपना सिर उठाया। समु काक और सरवानंद की चीखें निकल गईं। वह दोनों ज़ार ज़ार रोने लगे और ज़ान द्यद के पैरों पर गिर गये। ज़ान द्यद ने दोनों को पहचान लिया। उस ने दोनों को उठा कर अपने सीने से लगाया और कहा, ''कब से प्रतीक्षा कर रही हूँ? आज तुम लोगों को अपनी ज़ान याद आई?'

ज़ान द्यद अकेली जाने को तैयार नहीं हुई। वह बोली, ''मैं तुम लोगों के साथ तभी जा सकती हूं जब तुम मेरी 'वसमथ' को भी साथ ले जाओगे।'' मामला जटिल था। 'वसमथ' साथ ले जाना बहुत कठिन था मगर ज़ान द्यद अड़ गई। उस के सामने दोनों की एक न चली। समु काक ने ज़ान द्यद का हाथ पकड़ा पर उस ने छुड़ा लिया। वह स्वयं बिना सहारे चलने को तैयार थी। सरवानंद ने 'वसमथ' को रस्सी से बाँध दिया। अब दोनों ने उसको दो तरफ से पकड़ कर खींचना शुरू किया। दोनों के खींचने के बाद पता चला कि 'वसमथ' ज़्यादा भारी नहीं थी। कितने ही दिन चल कर उन्होंने तक़रीबन आधा सफर तय किया। अब वह पहाड़ी मैदान के निकट पहुँच गये थे। आगे ढ़लान थी पर उतरना बहुत मुश्किल था। समु काक बहुत थक चुका था। उस की हिम्मत जवाब दे रही थी। वह एक रात सुस्ता कर दूसरे दिन आगे बढ़ना चाहता था, इसलिये उन्होंने कश्यप नाग पर डेरा डालने का फैसला किया। कश्यप नाग आस पास के सब चश्मों से बड़ा था और इस का पानी बहुत मीठा था।

कश्यप नाग से सामने की ढलान और नीचे का बड़ा मैदान साफ़ नज़र आ रहा था। मैदान के उस छोर पर ग्रज़ु आरु (पहाड़ी नदी का नाम) बह रहा था जिस को पार कर भरतपुर का रास्ता था। कश्यप नाग पर लेटते ही समु काक और सरवानंद गहरी नींद सो गये। ज़ान द्यद यहाँ भी जाग रही थी।

दूसरे दिन सुबह जब सरवानंद जाग गया, उन्होंने देखा समु काक मर चुका था। पर इस बार ज़ान द्यद के साथ साथ उसने भी 'वसमथ'को ज़ोर से पकड़ कर रखा था।

अब सरवानंद परेशान था। अकेला आदमी क्या कर सकता है? दूसरा साथ में हो तो बोझ भी कम हो जाता है और हिम्मत भी बढ़ती है। ज़ान द्यद ने मशवरा दिया, ''परेशानी की कोई बात नहीं है। अभी भी समय है। अगर भरतपुर से कोई यहाँ आने को तैयार होता है तो मुश्किल आसान हो जायेगी।'' सरवानंद को यह बात ठीक लगी। ज़ान द्यद 'वसमथ' की रखवाली के लिये अकेली ही काफ़ी थी इसलिये वह जाने को तैयार हुआ। नगर से कोई आदमी साथ में लाने का वादा कर उस ने ज़ान द्यद से विदा ली।

भरतपुर पहुँच कर सरवानंद ने पहले तो लोगों को ज़ान द्यद से मुलाकात की कहानी सुनाई और बाद में उन्हें सम् काक के स्वर्गवास होने की बात कही। ज़ान द्यद की बात सुन कर सभी खुश हुये लेकिन सम् काक के गुज़रने की बात सुन कर नगर में मातम छा गया। उस दिन और कोई बात न हो सकी।

दूसरे दिन सरवानंद ने बुज़ुर्गों की एक बैठक बुलाई और उन से मदद मांगी। बैठक में कुछ युवक भी आये थे। सरवानंद के साथ कौन कौन जा सकता है, इस बात पर लम्बी चर्चा हुई। दो युवक भी बुज़ुर्गों के साथ जाना चाहते थे पर उन के घर वालों ने उन्हें मना किया। यद्यपि काशी नाथ के सिवा कोई भी आदमी मन से जाने को तैयार नहीं था, मगर एक दूसरे को दिखाने के लिये सब सिर हिला रहे थे। काशी नाथ के शरीर में अब भी जोश भरा हुआ था लेकिन उस की आयु देख कर लोगों ने उसे मना कर दिया। सरवानंद के साथ कौन कौन जायेगा, यह तय करने के लिये पर्चियाँ डाली गईं। इस तरह चार आदमियों की एक सूची तैयार की गई।

सूची में पहला नाम अक् लाल का था। वह ५२ साल का था और दुकान चलाता था। घर में उस की औरत, दो बेटे और दो बहुयें थीं। दोनों बेटे नौकरी करते थे। घर का गुज़ारा अच्छा चल रहा था। अक् लाल दुकानदारी किसी कमाई के लिये नहीं करता था। उस का कहना था कि घर में दिन भर बैठ कर घर वालों के साथ तू तू मैं मैं करने से अच्छा है कि कोई काम किया जाये। इससे सेहत भी ठीक रहती है और घर भी। उस की दुकान में बेचने को कुछ ज़्यादा सामान भी नहीं रखा था।

सूची में दूसरा नाम मोहन लाल का था। वह ४५ साल का था। उस ने शादी नहीं की थी। उस के साथ उस के बूढ़े माता पिता भी रहते थे। ज़मीन बहुत थी। मोहन लाल कुछ ख़ास पढ़ा लिखा नहीं था। साथ ही वह बदतमीज़ और बदमिज़ाज भी था। कहते हैं कि व्यथुबल में एक दो घर से उस के लिये शादी के पैगाम आये थे पर जब लड़की वालों ने उस का असली रूप देखा तो लड़की देने से इनकार किया। उस समय मोहन लाल २८ साल का था। उस के बाद कहीं से कोई रिश्ता नहीं आया और मोहन लाल ने शादी के बारे में सोचना ही छोड़ दिया।

एक और नाम जमाल दीन का था। आयु में वह अक् लाल से छोटा और मोहन लाल से बड़ा था। वह दूसरे शहर में एक व्यापारी के हाँ मुनीम का काम करता था। व्यापारी उस की बहुत इज़्जत करता था। जमाल दीन को यह नौकरी बहुत पसंद थी। वह अपनी मर्ज़ी से ही जब चाहे नौकरी पर जाता था। उस पर किसी प्रकार की कोई पाबंदी नहीं थी। जमाल दीन की पत्नी का नाम महबूबा था। एक लड़की थी, नाम था यासमीन। उस की शादी हो चुकी थी।

चौथा नाम गोपी नाथ का था। उम्र ३४ या ३५ साल। वह व्यापारी था। उस ने माता पिता को छोड़ कर अपना घर अलग से बसा लिया था क्योंकि उस की औरत मिज़ाज की तेज़ थी। उस के कोई बच्चा नहीं था। गोपी नाथ को स्वयं भी माता पिता के साथ कोई ख़ास लगाव नहीं था और वह उम्र भर उन का आज्ञाकारी बनकर नहीं रहना चाहता था। इस मामले में गोपी नाथ को उस के तमाम रिश्तेदारों ने समझाने की बड़ी कोशिश की लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। गोपी नाथ किसी की बात सुनने को तैयार ही नहीं था।

सरवानंद काफ़ी थका हुआ था, फिर भी वह तुरन्त वापस जाना चाहता था। उस ने दूसरे चार आदमियों से बात की। वह लोग कश्यप नाग जाने से पहले कुछ ज़रूरी काम निपटाना चाहते थे। फ़ैसला हुआ कि शुक्लपक्ष के दसवें दिन वह सवेरा होते ही सरवानंद के घर पहुंचेंगे और वहाँ से इकट्ठे कश्यप नाग की तरफ रवाना होंगे। अभी जाने में पांच दिन थे।

सरवानंद के लिये एक एक दिन गुज़ारना मुश्किल हुआ। पर उसे सब्र करना पड़ा क्योंकि और कोई चारा नहीं था। आख़िरकार निर्धारित दिन आ गया। सरवानंद सवेरा होने से पहले ही तैयार हुआ। वह जल्दी से जल्दी निकलना चाहता था क्योंकि उसे ज़ान द्यद की बहुत चिंता थी जिसे उस ने बड़ी मुश्किल से ढूंढ़ निकाला था।

सवेरा हो गया पर सरवानंद के यहाँ कोई नहीं आया। ''बस अब आ ही रहे होंगे'' यह सोच कर वह प्रतीक्षा करता रहा। जब सूरज चढ़ने के बहुत देर बाद भी कोई नहीं आया तो सरवानंद को चिंता होने लगी। वह लोग ठीक भी हैं या नहीं, यह सोच कर उस ने सब के घर जाकर पता लगाने का निश्चय किया।

सरवानंद पहले अकु लाल के घर पहुंचा। अकु लाल दुकान पर जाने की तैयारी कर रहा था। सरवानंद को देखते ही उस के होश उड़ गये। अपने आप को सम्भालते हुये उस ने कहा, ''हे सर्व काक! मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था और अभी मैं तुम्हारे पास ही आने वाला था। दो दिन के बाद सालिग्राम के लड़के की सगाई है ना! तुम्हें मालूम है कि वह मेरे बिना किसी से भी सौदा सलफ नहीं लेता है। कल वह सुबह सवेरे मेरे पास आया और मुझे सामान की सूची दे कर गया। मैं कल से उसी का सामान बांध रहा हूं। अभी दो दिन और लगेंगे। मेरी बात मानो तो तुम कश्यप नाग के लिये निकल जाओ। यहाँ से मुक्त होते ही मैं भी आ जाऊँगा।'' सरवानंद के कुछ बोलने से पहले ही अकु लाल ने अपनी उंगलियों पर हिसाब लगाना शुरू किया और बोला, ''मैं पूर्णमासी के दिन अवश्य पहुंचूंगा। हाँ, यदि किसी वजह से मैं न आ सका तो मैं किसी और को भेज दूंगा। यह मेरा वादा है।'' सरवानंद ने पूछा, ''यह सालिग्राम कौन है?'' उस ने जवाब दिया, ''वह मखन लाल का साढू है। असल में है तो चचेरा साढू पर यह लोग थोड़े ही ऐसा मानते हैं?'' सरवानंद ने अकु लाल से आज्ञा ली। भारी मन से वह मोहन लाल के घर की तरफ़ बढ़ा।

मोहन लाल के घर पहुंच कर सरवानंद ने नीचे आंगन में से ही उस को आवाज़ दी। ऊपर खिड़की से जब मोहन लाल ने सरवानंद को देखा तो वापिस मुड़ गया। अंदर उस की किसी से कुछ बात हुई। थोड़ी देर बाद उस का बूढ़ा बाप नीचे आया। सरवानंद को देख कर उस ने पहले नमस्कार किया और फिर बोला, ''तुम्हें यहाँ आने में तकलीफ़ हुई होगी। मैं ने कल ही मोहन जी को बताया था कि जाकर तुम्हें असली बात बता दे।'' सरवानंद की समझ में कुछ नहीं आया। मोहन लाल ने समझाया, ''पहले तुम हमें बधाई दो। मोहन जी की शादी की एक जगह बात चल रही है। आज शाम को लड़की वालों की तरफ से कुछ लोग यहाँ आ रहे हैं। अगर माँ रागिन्या को मंज़ूर हुआ तो अगले रविवार को रिश्ता पक्का कर देंगे। हम लोग इसी काम में जुटे हुये हैं। अब तुम ही बताओ, इस समय हम मोहन जी को कैसे कहीं भेज सकते हैं?'' सरवानंद उदास होकर वापिस मुड़ा।

भूखा प्यासा सरवानंद जमाल दीन के घर पहुँचा। वहाँ कोई नहीं था। दरवाज़े खिड़कियाँ बंद थे। सरवानंद ने इधर उधर देखा। जमाल दीन का नौकर पेड़ पौधों को पानी दे रहा था। सरवानंद ने पूछा, ''जमाल साहब कहाँ हैं?'' नौकर बोला, ''वे काम से वापिस ही नहीं आये। उन के मालिक ने उनकी तमाम छुट्टियाँ रद्द कर दी हैं।'' ''और महबूबा कहाँ है?'' सरवानंद ने पूछा। ''वह लड़की को देखने उस के ससुराल गई है।'' सरवानंद वापस निकला पर उसे पूरा यक़ीन था कि जमाल दीन और महबूबा दोनों घर के अंदर ही हैं और नौकर ने बाहर से ताला लगा कर रखा है।

जब सरवानंद गोपी नाथ के घर पहुँचा, आधा दिन ढल चुका था। गोपी नाथ ने ज्योंही सरवानंद को देखा, उस के चेहरे पर ऐसी रौनक आई मानो वह उसी की प्रतीक्षा कर रहा हो। किसी ने शायद पहले से

उसे खबर पहुंचाई थी। ''मैं ने सुना कि आप अभी तक कश्यप नाग नहीं गये हैं इसलिये मैं आप के पास ही आ रहा था। मैं सब से पहले आप को ही यह शुभ समाचार देना चाहता था।'' सरवानंद हैरान हुआ। ''कैसा शुभ समाचार?'' गोपी नाथ ने कहा, ''पिताजी से मेरी सुलह हो गई है। कल मेरे बड़े मामाजी घर पर आये थे और उन्होंने हम दोनों को आपस में मिलवाया। आज हम पिता जी के घर पर जा रहे हैं 'रोठ' बनाने के लिये। मेरी बड़ी तमन्ना थी आप के साथ आने के लिये। मुझे क्षमा करना। जब आप वापिस आयेंगे, मैं आप का 'रोठ' खुद पहुंचा दूंगा।''

सरवानंद अकेले ही निकल पड़ा। जब वह ज़ान द्यद के पास पहुँचा, वह बहुत बेसब्री से उस का इन्तज़ार कर रही थी। सरवानंद थक कर निढ़ाल हो चुका था। आते ही वह ज़मीन पर लेट गया। ज़ान द्यद ने इधर उधर देखा, सरवानंद के सिवा कोई भी दिखाई नहीं दिया। सरवानंद ने उसे पूरी कहानी सुनाई।

पूर्णमासी का दिन आया और गुज़र गया, पर अकु लाल नहीं आया। सरवानंद के हाथ पाँव जवाब देने लगे। सोचा, अकु लाल भी धोखा ही दे गया। मगर ज़ान द्यद का दिल बहुत बड़ा था। सरवानंद को दिलासा देते हुये कहा, ''अकु लाल कभी झूट नहीं बोलेगा। तुम्हारे साथ वादा किया है तो ज़रूर आयेगा। आज नहीं आ सका तो अगली पूर्णमासी को आयेगा, पर आयेगा ज़रूर।'' सरवानंद की हिम्मत बंध गई। मन में जो परेशानी थी, वह खत्म हो गई। अपने आप को कोसा कि मैं क्यों ऐसी बातें मन में लाता हूँ। ''क्या पता, वह बिचारा अब भी सालिग्राम का सामान ही बांध रहा होगा?'' सरवानंद ने मन में सोचा।

एक और पूर्णमासी आई पर अकु लाल नहीं आया। सरवानंद में अब इतनी हिम्मत नहीं थी कि नगर जाकर फिर से हालात का जायज़ा ले। शीतकाल आया। बहुत बर्फ गिरी। कड़ाके की ठंढ पड़ी पर अकु लाल न तो स्वयं आया, न ही उसने किसी और को भेजा। इस के बाद बसन्त आया। सरवानंद ने सोचा कि शायद अकु लाल बर्फ की वजह से न आ सका हो। बसन्त की पहली पूर्णमासी को वह सुबह सवेरे से ही ग्रज़ु नदी की तरफ मुँह करके अकु लाल का इन्तज़ार करने लगा। शाम होने तक जब सरवानंद ने अपना सिर नहीं उठाया तो ज़ान द्यद ने उस को हिलाया। सरवानंद की आँखें स्थिर थीं और बदन ठंडा। वह मर चुका था।

समय चलता रहा। कितने ही पैदा हुये और कितने ही मर गये, मगर ज़ान द्यद की हिम्मत नहीं टूटी। उसने किसी न किसी के वहाँ आने की उम्मीद बरकरार रखी। क्योंकि वरदान के मुताबिक जब यह बात पक्की हो जाये कि लोगों को उस की ज़रूरत नहीं रही, तभी उस का अंत हो सकता था। और ज़ान द्यद को अभी अपना अंत मंज़ूर नहीं था।

कहते हैं कि ज़ान द्यद आज भी 'वसमथ' के साथ कश्यप नाग के किनारे यह उम्मीद लेकर बैठी है कि किसी न किसी पूर्णमासी को अकु लाल या उस का कोई साथी ग्रज़ु नदी को पार कर उसको लेने ज़रूर आयेगा।

❖ ❖ ❖